आचार्य वप्पदेव

जीवन-परिचय : आचार्यों की परम्परा में आचार्य शुभनन्दि, रविनन्दि और वप्पदेवाचार्य के नाम आते हैं। शुभनन्दि और रविनन्दि नाम के दो आचार्य अत्यन्त विद्वान और कुशाग्रबुद्धि थे। इन दोनों आचार्यों से वप्पदेवाचार्य ने समस्त सिद्धान्त ग्रन्थों का अध्ययन किया था। जयधवला एवं महाधवला में इनका परिचय मिलता है।

वप्पदेव का समय वीरसेन स्वामी के पूर्व है। वीरसेनाचार्य के समक्ष वप्पदेव की व्याख्या लिखी जा चुकी थी। अत: वप्पदेवाचार्य को वीरसेनाचार्य के पूर्व और यतिवृषभाचार्य और आर्यमंक्षु-नागहस्ति के समकालीन मान सकते हैं। इस आधार पर आचार्य वप्पदेव का समय 5वीं-6ठी शती है।

रचना-परिचय : वप्पदेवाचार्य ने टीका लिखी है—

1. व्याख्याप्रज्ञप्ति टीका : वप्पदेवाचार्य ने अध्ययन के पश्चात् महाबन्ध को छोड़ षट्खंडागम के शेष पाँच खंडों पर व्याख्याप्रज्ञप्ति नाम की टीका लिखी है और छठे खण्ड की संक्षिप्त विवृत्ति भी लिखी है। इन छह खंडों के पूर्ण हो जाने के बाद उन्होंने 'कषायपाहुड' ग्रन्थ की टीका लिखी है। ये सभी रचनाएँ प्राकृतभाषा में हैं।